IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

पंडित दीनदयाल उपाध्याय के सामाजिक विचार: एकात्म मानववाद और भारतीय समाज

प्रदीप सिंह (रिसर्च स्कॉलर)

पंडित दीनदयाल उपाध्याय पीठ

हिमाचल प्रदेश, विश्वविधालय शिमला,

डॉक्टर योगराज

सहायक आचार्य राजनीतिक विज्ञान

(ICDEOL) हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, समर हिल शिमला, 171005

सारांश :

पंडित दीनदयाल उपाध्याय भारतीय जनसंघ के प्रमुख वैचारिक स्तंभ और एकात्म मानववाद *के प्रवर्तक माने जाते हैं। उनके सामाजिक विचार भारतीय संस्कृति, परंपराओं और जीवन मूल्यों पर आधारित थे, जिनमें समाज को एक जीवित इकाई के रूप में देखा गया। उन्होंने पश्चिमी समाजवाद और पूंजीवाद की सीमाओं को स्पष्ट करते हुए भारतीय दृष्टिकोण को अधिक उपयुक्त बताया। उनके अनुसार मनुष्य का विकास केवल आर्थिक आधार पर नहीं, बल्कि शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक और आध्यात्मिक संतुलन से संभव है। उनके चिंतन का केंद्र* समरस समाज *की स्थापना और* अंत्योदय *की संकल्पना थी, जिसके अनुसार अंतिम व्यक्ति का उत्थान किए बिना प्रगति अधूरी है। उनकी विचारधारा में ग्राम-केन्द्रित विकास, स्वावलंबन, नैतिकता और आचरण का विशेष महत्व है। उपाध्याय जी ने समाज में सामंजस्य और संगठन पर बल देते हुए वर्ग-संघर्ष को अस्वीकार किया और विभिन्न वर्गों एवं जातियों को पूरक मानकर एकात्मता पर ज़ोर दिया। वे मानते थे कि भारतीय समाज का वास्तविक आधार* धर्म *है, जिसे जीवन की संपूर्णता का मार्गदर्शक तत्व माना जाना चाहिए। यह शोध-पत्र उनके सामाजिक विचारों का विश्लेषण करता है और दर्शाता है कि उनका दर्शन केवल एक राजनीतिक विचारधारा न होकर भारतीय समाज को आत्मनिर्भर, समरस और नैतिक आधार पर पुनर्गठित करने का प्रयास है। आधुनिक भारत में भी उनका* एकात्म मानववाद *सामाजिक न्याय और सांस्कृतिक अस्मिता की दिशा में महत्वपूर्ण मार्गदर्शन प्रदान करता है।*

कूट शब्द: *पंडित दीनदयाल उपाध्याय, सामाजिक विचार, एकात्म मानववाद, समरस समाज, अंत्योदय, भारतीय संस्कृति, ग्राम-केन्द्रित विकास, स्वावलंबन ।*

परिचय

पंडित दीनदयाल उपाध्याय के सामाजिक विचारों का मूल दर्शन एकात्म मानववाद 'है, जो व्यक्ति, समाज और ब्रह्मांड के बीच एक संतुलित और समग्र संबंध पर जोर देता है। यह दर्शन पश्चिमी पूंजीवाद और साम्यवाद दोनों की कमियों को उजागर करता है और एक भारतीय-केंद्रित सामाजिक-आर्थिक मॉडल प्रस्तुत करता है। भारतीय समाज प्राचीन काल से ही आध्यात्मिकता, सामूहिकता और धर्म-आधारित जीवन दृष्टि पर आधारित रहा है। जहाँ पश्चिमी सभ्यताएँ भौतिक उन्नति और व्यक्तिवाद पर ज़ोर देती रही हैं, वहीं भारतीय परंपरा ने समाज को एक जीवंत इकाई मानते हुए व्यक्ति और समुदाय के बीच संतुलन की बात कही। स्वतंत्रता के बाद भारत में यह चुनौती सामने आई कि राष्ट्र-निर्माण किस दिशा में किया जाए। इस पृष्ठभूमि में पंडित दीनदयाल उपाध्याय एक प्रमुख वैचारिक व्यक्तित्व के रूप में उभरे। वे भारतीय जनसंघ के

वैचारिक आधार स्तंभ थे और उन्होंने एकात्म मानववाद का दर्शन प्रस्तुत किया। यह दर्शन न तो पूंजीवाद की तरह केवल व्यक्तिगत लाभ पर आधारित है, और न ही समाजवाद की तरह वर्ग-संघर्ष को प्राथमिकता देता है। इसके विपरीत, यह भारतीय संस्कृति, धर्म और जीवन मूल्यों पर आधारित एक समग्र दृष्टि है। पंडित दीनदयाल उपाध्याय भारत के उन अग्रणी विचारकों में से एक हैं, जिन्होंने स्वतंत्रता के बाद भारतीय समाज, राजनीति और संस्कृति को समझने और दिशा देने का मौलिक प्रयास किया। उनका चिंतन केवल राजनीतिक दर्शन तक सीमित नहीं था, बल्कि भारतीय समाज की संरचना, उसकी मूल पहचान, उसकी समस्याओं तथा उसके समाधान के समग्र दृष्टिकोण को भी समाहित करता है। उपाध्याय जी का मानना था कि भारत की सामूहिक चेतना, उसकी सांस्कृतिक निरंतरता और उसका जीवनदर्शन पश्चिमी विचारधाराओं से मूलतः भिन्न है; इसलिए भारत की समस्याओं का समाधान भी भारतीय परंपरा, इतिहास और अनुभव पर आधारित होना चाहिए। इसी संदर्भ में उनकी विचारधारा 'एकात्म मानववाद' प्रस्तुत होती है एक ऐसी जीवनदृष्टि जो समाज, राष्ट्र, व्यक्ति और प्रकृति के बीच संतुलित, समरस और अखंड संबंध की स्थापना पर आधारित है।

एकात्म मानववाद का मूल सार यह है कि मनुष्य न तो केवल आर्थिक प्राणी है, न केवल भौतिक आवश्यकताओं का उपभोक्ता, और न ही मात्र राजनीतिक अधिकारों का धारक; बल्कि वह विचार, भावना, संस्कृति, आध्यात्मिकता, समाज और पर्यावरण से जुड़ी एक बहुआयामी इकाई है। पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने मनुष्य के विकास को चार आयामों शरीर, बुद्धि, मन और आत्मा से जोड़ा, और माना कि वास्तविक प्रगति तभी संभव है जब इन चारों स्तरों का संतुलित विकास हो। यह दृष्टिकोण उस समय विशेष रूप से महत्वपूर्ण था जब भारत में समाजवाद, पूंजीवाद तथा साम्यवाद जैसी आयातित विचारधाराएँ प्रभावी हो रही थीं। उपाध्याय जी ने इन सभी पश्चिमी प्रणालियों की आलोचना करते हुए कहा कि ये मनुष्य और समाज को खंडित रूप से देखती हैं कहीं व्यक्ति सर्वोपरि है तो कहीं राज्य। एकात्म मानववाद इन दोनों की परस्पर निर्भरता और पूरकता को स्वीकार करते हुए 'न तो व्यक्तिवाद, न ही सामूहिकतावाद, बल्कि समरसतावाद' की राह दिखाता है। भारतीय समाज के संदर्भ में उपाध्याय जी का चिंतन अत्यंत प्रासंगिक और विशिष्ट था। उन्होंने समाज को एक जीवंत और गतिशील इकाई के रूप में देखा, जो अनादिकाल से अपनी सांस्कृतिक निरंतरता, मूल्यपरंपरा और संगठनात्मक क्षमता से संचालित होता रहा है। उनका मानना था कि भारतीय समाज का संगठन परिवार, ग्राम, जाति, समुदाय और विविध सामाजिक संस्थाओं के माध्यम से स्वाभाविक रूप से हुआ है; यह संगठन किसी बाहरी दबाव या कृत्रिम संरचना का परिणाम नहीं है। इसलिए भारतीय समाज की किसी भी समस्या का समाधान उसी की स्वाभाविक संरचना, परंपराओं और मूल्यों की समझ पर आधारित होना चाहिए।

दीनदयाल उपाध्याय जाति व्यवस्था की आलोचना करते हुए कहते हैं कि जाति मूलतः कर्म आधारित थी और समाज में विविध भूमिकाओं के प्राकृतिक विभाजन का परिणाम थी, परंतु समय के साथ इस व्यवस्था में जड़ता और विभाजन पैदा हो गया, जिससे सामाजिक विषमता और अन्याय उत्पन्न हुआ। उनकी दृष्टि में जातिगत भेदभाव भारतीय समाज की एक बड़ी चुनौती है, जिसका समाधान सामाजिक समरसता, परस्पर सम्मान और समान अवसर पर आधारित होना चाहिए। वे मानते थे कि समाज का संगठन विविधता में एकता का रूप है, और यह तभी स्थायी हो सकता है जब सभी वर्गों को समान गरिमा, अवसर और सम्मान प्राप्त हो। इस संदर्भ में उपाध्याय जी का विचार था कि किसी भी प्रकार का सामाजिक परिवर्तन ऊपर से थोपे गए कानूनों से नहीं, बल्कि समाज की आंतरिक नैतिक प्रेरणा और सांस्कृतिक जागरण से संभव होता है। राष्ट्र के संदर्भ में भी उपाध्याय जी का विचार अत्यंत व्यापक था। वे राष्ट्र को न केवल राजनीतिक या भौगोलिक इकाई मानते थे, बल्कि सांस्कृतिक चेतना और सामूहिक आत्मा का रूप भी समझते थे। इस परिप्रेक्ष्य में उनका एकात्म मानववाद व्यक्ति और समाज के बीच संतुलन स्थापित करने के साथ-साथ समाज और राष्ट्र को भी अविभाज्य मानता है। उनके अनुसार, राष्ट्र तभी सुदृढ़ बन सकता है जब समाज का संगठन मजबूत हो, और समाज तभी मजबूत हो सकता है जब व्यक्ति का बहुमुखी विकास हो। इस प्रकार उनका सामाजिक चिंतन राजनीतिक दर्शन से घनिष्ठ रूप से जुड़ा हुआ है, परंतु उसी के भीतर सांस्कृतिक, आध्यात्मिक और नैतिक आयाम भी समाहित हैं।

आधुनिक भारत के संदर्भ में पंडित दीनदयाल उपाध्याय के सामाजिक विचार अत्यंत महत्वपूर्ण होकर सामने आते हैं। वैश्वीकरण, उपभोक्तावाद, सामाजिक विषमता, सांस्कृतिक विघटन और आंतरिक संघर्षों से जूझते भारतीय समाज को उनकी विचारधारा एक ऐसी वैकल्पिक दिशा प्रदान करती है जो न तो अंधानुकरण है, न ही अंध विरोध; बल्कि भारतीयता पर आधारित एक संतुलित, मानवीय और समरस मार्ग प्रस्तुत करती है। उनके विचार विशेष रूप से सामाजिक न्याय, सामाजिक समरसता, ग्रामीण विकास, आत्मनिर्भरता, विकेंद्रीकरण, परिवार-केन्द्रित सामाजिक संरचना और नैतिक मूल्यों की पुनर्स्थापना जैसे विषयों में आज भी अत्यंत प्रासंगिक हैं। इस प्रकार पंडित दीनदयाल उपाध्याय का एकात्म मानववाद भारतीय समाज के लिए एक ऐसा समन्वित दर्शन प्रस्तुत करता है जो आधुनिक चुनौतियों का समाधान भारतीय परिप्रेक्ष्य में खोजता है। उनका सामाजिक चिंतन न केवल परंपरा का सम्मान करता है, बल्कि परिवर्तन की आवश्यकता को भी स्वीकार करता है। इसलिए

उनके विचारों का अध्ययन केवल ऐतिहासिक या राजनीतिक उद्देश्य से नहीं, बल्कि समकालीन भारतीय समाज की संरचना, समस्याओं और संभावनाओं को समझने की दृष्टि से भी अत्यंत महत्वपूर्ण है।

शोध उद्देश्य

इस शोध-पत्र का उद्देश्य है :

1. पंडित दीनदयाल उपाध्याय के सामाजिक विचारों का अध्ययन करना।
2. एकात्म मानववाद के सिद्धांतों को विस्तार से स्पष्ट करना।
3. भारतीय समाज और संस्कृति में उनकी विचारधारा की प्रासंगिकता का विश्लेषण करना।
4. गांधी, टैगोर और पश्चिमी विचारधाराओं से तुलनात्मक अध्ययन करना।
5. आधुनिक भारत में अंत्योदय, ग्राम विकास और नैतिक राजनीति के संदर्भ में उपाध्याय के विचारों की भूमिका को समझना।

एकात्म मानववाद के मुख्य सिद्धांत

एकात्म मानववाद पंडित दीनदयाल उपाध्याय का वह मौलिक दर्शन है, जो भारतीय जीवन-दृष्टि, समाज-व्यवस्था और मानव विकास को एक समग्र संदर्भ में समझने और व्यवस्थित करने का प्रयास करता है। यह दर्शन मानवीय जीवन को किसी एक आयाम या तत्व तक सीमित नहीं करता, बल्कि उसे बहुआयामी, परस्पर संबंधित और संतुलित इकाई के रूप में देखता है। आधुनिक युग में जहाँ राजनीतिक और आर्थिक विचारधाराएँ मनुष्य को केवल उत्पादन का साधन, उपभोक्ता या राजनीतिक इकाई के रूप में देखने लगी हैं, वहीं एकात्म मानववाद मनुष्य को उसके पूर्ण रूप में पहचानने और उसके सर्वांगीण विकास के लिए भारतीय चिंतनधारा से दिशा प्रदान करता है। प्रस्तुत विषय के अंतर्गत समग्र जीवन-दृष्टि, अंत्योदय, धर्म की भूमिका, स्वदेशी चेतना और समाज को जैविक इकाई मानने जैसे तत्वों का उल्लेख मिलता है, जो इस दर्शन की मूल आत्मा को प्रकट करते हैं।

सबसे पहले, एकात्म मानववाद की समग्र जीवन-दृष्टि यह बताती है कि मनुष्य मात्र शरीर या मन का नहीं, बल्कि शरीर, मन, बुद्धि और आत्मा से निर्मित एक पूर्ण इकाई है। आधुनिक भौतिकवादी विचारधारा जहाँ मानव विकास को केवल आर्थिक उन्नति या भौतिक प्रगति से जोड़कर देखती है, वहीं एकात्म मानववाद यह स्पष्ट करता है कि इन चारों आयामों शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक और आध्यात्मिक का संतुलित और एकीकृत विकास ही वास्तविक मानव प्रगति है। उपाध्याय जी के अनुसार, व्यक्ति और समाज को एक-दूसरे से अलग नहीं किया जा सकता; दोनों अन्योन्याश्रित हैं। व्यक्ति समाज का निर्माण करता है और समाज व्यक्ति के चरित्र और आचरण को दिशा देता है। इस प्रकार यह दर्शन न तो अति-व्यक्तिवाद को स्वीकार करता है और न ही अत्यधिक सामूहिकतावाद को, बल्कि दोनों के बीच संतुलन की खोज करता है। यह संतुलन ही मानव जीवन को स्थायी, अर्थपूर्ण और सामंजस्यपूर्ण बनाता है। एकात्म मानववाद का दूसरा महत्वपूर्ण सिद्धांत अंत्योदय है, जिसका तात्पर्य है समाज के अंतिम और सबसे कमजोर व्यक्ति का उत्थान। उपाध्याय जी ने स्पष्ट कहा कि किसी समाज या राष्ट्र की वास्तविक प्रगति तब मानी जाएगी जब विकास का लाभ उस व्यक्ति तक पहुँचे जो सबसे पीछे खड़ा है। यह विचार गांधीवाद से भी गहरा संबंध रखता है, जहाँ गांधी जी ने "सबसे कमजोर व्यक्ति पर विचार" की नीति प्रस्तुत की थी। अंत्योदय केवल एक सैद्धांतिक अवधारणा नहीं, बल्कि नीति निर्माण, सामाजिक न्याय और आर्थिक योजना के लिए मार्गदर्शक सिद्धांत है। यह विचार आज के समय में भी अत्यंत प्रासंगिक है, विशेषकर जब सामाजिक असमानताएँ, आर्थिक विषमता और अवसरों की कमी जैसे मुद्दे बढ़ रहे हों। अंत्योदय समाज के प्रत्येक वर्ग को न्यायपूर्ण अवसर प्रदान करने और सामाजिक समरसता को सुदृढ़ बनाने की दिशा में आत्मिक प्रेरणा देता है। तीसरा तत्व है धर्म का महत्व। यहाँ धर्म का अर्थ किसी विशेष संप्रदाय, मत, पूजा-पद्धति या अनुष्ठान से नहीं, बल्कि उस नैतिक और आचारिक व्यवस्था से है जो समाज को संचालित करती है। उपाध्याय जी के अनुसार, धर्म मनुष्य के जीवन में संतुलन और मर्यादा का आधार है; यह मनुष्य को भौतिक इच्छाओं की अनियंत्रित प्रवृत्ति से बचाता है और उसे नैतिक आचरण की प्रेरणा देता है। भारतीय चिंतन में धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष चार पुरुषार्थ माने गए हैं। दीनदयाल उपाध्याय कहते हैं कि अर्थ (धन) और काम (सुख) तभी सार्थक हैं जब उन्हें धर्म के मार्गदर्शन में संचालित किया जाए। धर्म की यह भूमिका व्यक्ति, समाज और राष्ट्र तीनों के लिए आवश्यक है, क्योंकि बिना नैतिक आधार के आर्थिक और सामाजिक गतिविधियाँ शोषण, अन्याय और संघर्ष का कारण बन सकती हैं। एकात्म मानववाद का चौथा स्तंभ है स्वदेशी और सांस्कृतिक राष्ट्रवाद। उपाध्याय जी ने भारतीय समाज के संगठन और विकास के लिए भारतीय परंपरा, संस्कृति और मूल्यों को आधार बनाने की बात कही। उनके अनुसार, हर राष्ट्र का विकास उसकी अपनी सांस्कृतिक धुरी और ऐतिहासिक अनुभवों के अनुसार होना चाहिए। उन्होंने आधुनिकीकरण का समर्थन किया, लेकिन स्पष्ट रूप से कहा कि आधुनिकीकरण को पश्चिमीकरण के समान नहीं समझा जाना चाहिए। भारत को पश्चिमी मॉडल को आँख बंद करके अपनाने की आवश्यकता नहीं है; बल्कि उसे अपनी आत्मा, पहचान और

सांस्कृतिक चेतना को सुरक्षित रखते हुए आधुनिक विज्ञान, प्रौद्योगिकी और प्रशासनिक सुधारों को अपनाना चाहिए। यह स्वदेशी दृष्टिकोण भारतीयता को बनाए रखते हुए प्रगतिशील विकास का मार्ग सुझाता है। उपाध्याय जी के विचारों में सांस्कृतिक राष्ट्रवाद वह शक्ति है जो समाज को जोड़ता है, आत्मविश्वास प्रदान करता है और राष्ट्रीय एकता को सुदृढ़ बनाता है। पाँचवाँ महत्वपूर्ण विचार है समाज को जैविक इकाई मानना। दीनदयाल उपाध्याय समाज को किसी यांत्रिक संस्था की तरह नहीं देखते, जहाँ अलग-अलग हिस्सों को किसी मशीन की भाँति जोड़ा गया हो। इसके विपरीत, वे समाज को एक जीवंत और स्वाभाविक रूप से विकसित हुई संस्था मानते हैं, जिसमें विभिन्न वर्ग, जातियाँ, क्षेत्र और समुदाय एक साथ रहते हैं और एक-दूसरे पर निर्भर होते हैं। यह दृष्टिकोण भारतीय परंपरा के उस सिद्धांत से प्रेरित है जिसे "सर्वे भवन्तु सुखिनः" और "वसुधैव कुटुम्बकम्" के रूप में व्यक्त किया गया है। समाज की यह जैविक समझ सामाजिक समरसता, परस्पर सम्मान, सहयोग और सामूहिक उत्तरदायित्व को बढ़ावा देती है। यह समाज को टकराव की बजाय सहयोग, विभाजन की बजाय एकता और संघर्ष की बजाय समाधान की दिशा में ले जाती है।

इस प्रकार, एकात्म मानववाद केवल एक राजनीतिक दर्शन नहीं, बल्कि भारतीय समाज के लिए एक समन्वित और व्यावहारिक मार्गदर्शन है। यह व्यक्ति, समाज, संस्कृति, अर्थव्यवस्था और नैतिकता के बीच संतुलन स्थापित करता है और विकास को केवल संसाधनों की उपलब्धता नहीं, बल्कि मानवीय मूल्यों और सामाजिक न्याय के साथ जोड़कर देखता है। आज के समय में जब सामाजिक असमानताएँ, सांस्कृतिक विघटन, नैतिक संकट और आर्थिक असंतुलन व्यापक स्तर पर दिखाई देते हैं, उपाध्याय जी का यह दर्शन एक वैकल्पिक, भारतीय और मानवीय दिशा प्रदान करता है। यह भारतीय समाज को न केवल अपनी जड़ों की ओर लौटने की प्रेरणा देता है, बल्कि उसमें निहित शक्ति और संभावनाओं को पुनः पहचानने का अवसर भी प्रदान करता है।

भारतीय समाज पर प्रभाव

एकात्म मानववाद का प्रभाव केवल राजनीतिक दर्शन तक सीमित नहीं है, बल्कि यह भारत की समग्र विकास नीतियों, सामाजिक दृष्टिकोण, सांस्कृतिक चेतना और शासन व्यवस्था पर भी गहराई से परिलक्षित होता है। इस दर्शन की मूल भावना यह है कि विकास वही सार्थक है जिसमें समाज के प्रत्येक व्यक्ति, विशेषकर अंतिम पंक्ति में खड़े कमजोर और वंचित वर्गों की उन्नति सुनिश्चित हो। इसी आधार पर समावेशी विकास एकात्म मानववाद की प्रमुख उपलब्धि के रूप में उभरता है। यह विचारधारा बताती है कि किसी भी राष्ट्र की प्रगति तब तक पूर्ण नहीं हो सकती जब तक समाज के सबसे कमजोर वर्ग को मुख्य धारा में शामिल न किया जाए। आधुनिक समाज में जहाँ आर्थिक प्रगति प्रायः असमानता को जन्म देती है, वहीं एकात्म मानववाद यह सुनिश्चित करता है कि विकास का लाभ केवल शीर्ष पर केंद्रित न रहे, बल्कि पूरे समाज में समान रूप से फैले। यह दृष्टिकोण सामाजिक न्याय, समान अवसर और संतुलित विकास की नींव रखता है, जो आज के भारत की नीति निर्माण प्रक्रिया में अत्यंत महत्वपूर्ण है। एकात्म मानववाद का प्रभाव कल्याणकारी योजनाओं में स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। स्वतंत्रता के बाद कल्याणकारी राज्य की अवधारणा तो थी, परंतु उसे एक ठोस और समाज-केंद्रित दिशा देने में उपाध्याय जी के "अंत्योदय" सिद्धांत ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। "अंत्योदय" का अर्थ है अंतिम व्यक्ति तक विकास पहुँचना, और इसी आधार पर भारत सरकार ने अनेक जन-कल्याणकारी कार्यक्रम शुरू किए हैं। दीन दयाल उपाध्याय अंत्योदय परिवार सुरक्षा योजना, अंत्योदय अन्न योजना, दीन दयाल उपाध्याय ग्रामीण कौशल योजना जैसी योजनाएँ प्रत्यक्ष रूप से उनके विचारों पर आधारित हैं। इन योजनाओं का लक्ष्य गरीब, असहाय, बेरोजगार, दिव्यांग, विधवा, अनुसूचित जाति-जनजाति और अन्य कमजोर वर्गों के जीवन में सुधार लाना है, जिससे उन्हें सम्मानजनक जीवन जीने का अवसर प्राप्त हो सके। इस प्रकार, यह दर्शन भारत के सामाजिक-आर्थिक परिदृश्य को अधिक न्यायसंगत और मानवीय बनाता है।

तीसरा महत्त्वपूर्ण पहलू है नैतिक मूल्यों पर जोर। एकात्म मानववाद केवल आर्थिक विकास का मार्ग नहीं दिखाता; यह मनुष्य और समाज के नैतिक उत्थान पर भी समान रूप से ध्यान देता है। उपाध्याय जी के अनुसार, यदि समाज मात्र भौतिक प्रगति पर आधारित हो और नैतिकता, संस्कृति व मानवीय मूल्यों की अनदेखी करे, तो वह समाज स्थिर और समरस नहीं रह सकता। यही कारण है कि एकात्म मानववाद नैतिकता, कर्तव्य-बोध, परिवार-केन्द्रित मूल्य, सांस्कृतिक परंपराएँ, स्वानुशासन और चरित्र-निर्माण पर विशेष जोर देता है। यह संतुलन आधुनिक भारत में अत्यंत आवश्यक है, जहाँ भौतिक प्रगति तेजी से बढ़ रही है, परंतु सांस्कृतिक और नैतिक चुनौतियाँ भी समान रूप से उभर रही हैं। इस दर्शन का प्रभाव भारतीय समाज को केवल आर्थिक रूप से ही नहीं, बल्कि नैतिक और सांस्कृतिक रूप से भी सुदृढ़ बनाता है। अंत में, राष्ट्रीय शिक्षा नीति *2020* में एकात्म मानववाद का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है। यह नीति भारत की शिक्षा को अधिक लचीला, बहु-विषयी, कौशल-आधारित और सांस्कृतिक रूप से समृद्ध बनाने का प्रयास करती है। नीति में भारतीय ज्ञान परंपरा, भारतीय भाषाओं, स्थानीय ज्ञान प्रणाली, योग, आयुर्वेद, नैतिक शिक्षा और मूल्य-आधारित शिक्षा पर विशेष बल दिया गया है, जो उपाध्याय जी की उस दृष्टि से मेल खाता है जिसमें शिक्षा केवल

रोजगार हासिल करने का माध्यम नहीं, बल्कि व्यक्तित्व निर्माण और समाज-निर्माण का साधन है। आधुनिकता और भारतीयता के संतुलन का यह प्रयास शिक्षा के क्षेत्र में एकात्म मानववाद के प्रभाव को रेखांकित करता है।

तुलनात्मक अध्ययन

गांधी और दीनदयाल उपाध्याय दोनों ही भारतीय समाज, संस्कृति और विकास को स्वदेशी दृष्टिकोण से समझने वाले महान चिंतक थे। गांधीजी ने ग्राम स्वराज्य, सत्य, अहिंसा और सर्वोदय को अपने विचारों का केंद्र बनाया। उनका मानना था कि भारत की आत्मा गांवों में बसती है और समाज का वास्तविक विकास तभी संभव है जब गांव आत्मनिर्भर, नैतिक और संगठित हों। इसी प्रकार दीनदयाल उपाध्याय ने भी ग्राम-केन्द्रित विकास और अंत्योदय, अर्थात समाज के अंतिम व्यक्ति के उत्थान, को सामाजिक-आर्थिक विकास की आधारशिला माना। दोनों विचारकों ने यह माना कि विकास केवल आर्थिक वृद्धि नहीं, बल्कि नैतिकता, मानवीय मूल्यों और सामाजिक समरसता पर आधारित होना चाहिए। गांधीजी का सर्वोदय और उपाध्याय जी का अंत्योदय एक-दूसरे के पूरक सिद्धांत हैं, जिनका उद्देश्य समाज के कमजोर वर्गों तक विकास का लाभ पहुँचाना है। इस प्रकार दोनों ही चिंतकों की दृष्टि भारतीय परंपरा, संस्कृति और नैतिक आधारों से प्रेरित थी। रवींद्रनाथ टैगोर और दीनदयाल उपाध्याय के विचारों में भी कई समानताएँ दिखाई देती हैं। टैगोर ने मानवतावाद, आध्यात्मिकता और व्यक्तित्व के समग्र विकास को अत्यंत महत्त्वपूर्ण माना। उनका मानना था कि मनुष्य का विकास केवल शिक्षा या ज्ञान से नहीं, बल्कि प्रकृति, कला, संवेदना और आध्यात्मिक साधना से होता है। इसी प्रकार उपाध्याय जी ने भी मनुष्य को शरीर, मन, बुद्धि और आत्मा से बने एक समग्र प्राणी के रूप में देखा और उसके संतुलित विकास पर बल दिया। दोनों विचारकों का विश्वास था कि आध्यात्मिक चेतना और मानवीय संवेदना के बिना समाज की उन्नति अधूरी है।

आधुनिक भारत में प्रासंगिकता

आधुनिक भारत में पंडित दीनदयाल उपाध्याय का एकात्म मानववाद अत्यंत प्रासंगिक होता जा रहा है, क्योंकि यह दर्शन उन चुनौतियों का समाधान प्रस्तुत करता है जिनका सामना आज का भारतीय समाज कर रहा है। वर्तमान समय में आर्थिक असमानता, सामाजिक विषमता, नैतिकता का क्षरण, सांस्कृतिक विघटन, पर्यावरणीय संकट और बढ़ती भौतिकवादी प्रवृत्तियाँ समाज को असंतुलन की ओर ले जा रही हैं। ऐसी परिस्थितियों में एकात्म मानववाद मनुष्य और समाज को एक समग्र दृष्टि से देखने की प्रेरणा देता है, जहाँ आर्थिक विकास के साथ नैतिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक उन्नति का संतुलन आवश्यक माना गया है। उपाध्याय जी का अंत्योदय सिद्धांत आज की विकास नीतियों का आधार बनता जा रहा है—जिसमें गरीब, वंचित और अंतिम व्यक्ति तक योजनाओं का लाभ पहुँचाना सरकार की प्राथमिकता है। सामाजिक न्याय, समान अवसर और समावेशी विकास के लिए यह दृष्टिकोण अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। आज जब वैश्वीकरण और बाज़ारवाद के कारण समाज में आर्थिक व सांस्कृतिक असंतुलन बढ़ रहा है, तब उनका स्वदेशी और सांस्कृतिक राष्ट्रवाद भारतीय पहचान और आत्मनिर्भरता को मजबूत करने में सहायक है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति *2020* में भारतीय ज्ञान परंपरा, मूल्य-आधारित शिक्षा और बहुआयामी विकास को जिस प्रकार स्थान दिया गया है, वह सीधे उपाध्याय जी के समग्र मानव विकास के विचारों से मेल खाता है। साथ ही, परिवार, समुदाय और समाज को जैविक इकाई मानने का उनका दृष्टिकोण आधुनिक समाज में बढ़ते विखंडन और व्यक्तिगत अलगाव के समय में सामाजिक समरसता को पुनर्स्थापित करने में सहायक सिद्ध होता है।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय के एकात्म मानववाद का मूल आधार ग्राम-केन्द्रित विकास और स्वावलंबन है। उनके अनुसार भारत की आत्मा गाँवों में बसती है, इसलिए वास्तविक विकास तभी संभव है जब ग्रामीण समाज आत्मनिर्भर बने। गाँव केवल उत्पादन इकाई नहीं हैं, बल्कि भारतीय संस्कृति, परंपरा और सामाजिक सामंजस्य के आधार स्तंभ भी हैं। उपाध्याय जी का मानना था कि प्रत्येक गाँव को इस प्रकार संगठित किया जाए कि उसकी आवश्यकताएँ स्थानीय संसाधनों से पूरी हों। शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार और बुनियादी सुविधाएँ गाँवों में उपलब्ध हों ताकि पलायन कम हो और ग्रामीण अर्थव्यवस्था मजबूत बने। उनके अनुसार ग्राम-स्वावलंबन का अर्थ केवल आर्थिक स्वनिर्भरता नहीं, बल्कि सांस्कृतिक और नैतिक स्वावलंबन भी है। आधुनिक भारत में अनेक योजनाएँ इस दृष्टिकोण को साकार करने का प्रयास करती हैं। स्टार्टअप इंडिया, मेक इन इंडिया, और स्किल इंडिया ग्रामीण युवाओं को रोजगार और उद्यमिता से जोड़ रहे हैं। मनरेगा, प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना और डिजिटल इंडिया ने गाँवों में आधारभूत ढांचा मजबूत किया है। ये प्रयास उपाध्याय के विचारों से मेल खाते हैं, परंतु अब भी बेरोजगारी, कृषि पर निर्भरता और पलायन जैसी चुनौतियाँ बनी हुई हैं। स्पष्ट है कि दीनदयाल उपाध्याय का ग्राम स्वावलंबन केवल आर्थिक दृष्टि तक सीमित नहीं है। यह सामाजिक एकता, नैतिकता और सांस्कृतिक अस्मिता की रक्षा का भी मार्ग है। यदि आधुनिक नीतियाँ उनके दृष्टिकोण को आत्मसात करें, तो ग्रामीण भारत न केवल आत्मनिर्भर होगा बल्कि पूरे राष्ट्र के लिए समरस और संतुलित विकास का आधार भी बनेगा।

आलोचनात्मक दृष्टि

पंडित दीनदयाल उपाध्याय का एकात्म मानववाद एक मौलिक और भारतीय संस्कृति पर आधारित वैचारिक योगदान माना जाता है, किंतु इस पर कई विद्वानों ने आलोचनात्मक दृष्टि भी प्रस्तुत की है। सबसे पहली आलोचना यह है कि उपाध्याय जी ने आधुनिक औद्योगिकरण, विज्ञान और तकनीकी प्रगति की जटिलताओं पर पर्याप्त विचार नहीं किया। उनका ग्राम-केन्द्रित विकास मॉडल ग्रामीण समाज को आत्मनिर्भर तो बनाता है, लेकिन आज के वैश्वीकरण और शहरीकरण के युग में इसे सीमित और आंशिक दृष्टिकोण माना जाता है। समकालीन औद्योगिक ढांचा, वैश्विक पूंजी और तकनीकी नवाचार जिस तीव्रता से समाज को प्रभावित कर रहे हैं, उन पर उपाध्याय जी का विमर्श अपेक्षाकृत संक्षिप्त दिखाई देता है। दूसरी आलोचना यह है कि उनकी विचारधारा राजनीति में व्यापक जनाधार प्राप्त नहीं कर सकी। यद्यपि भारतीय जनसंघ और बाद में भारतीय जनता पार्टी ने उनके विचारों को वैचारिक आधार बनाया, किंतु बड़े पैमाने पर जनता तक इसे प्रत्यक्ष राजनीतिक कार्यक्रम के रूप में पहुँचाना कठिन सिद्ध हुआ। आलोचक मानते हैं कि एकात्म मानववाद एक गहन दार्शनिक और सांस्कृतिक विमर्श है, लेकिन इसकी व्यावहारिक नीति-रूपांतरण की दिशा उतनी स्पष्ट नहीं रही। तीसरी आलोचना यह है कि उपाध्याय जी की अवधारणा परंपरागत भारतीय समाज की संरचना ग्राम व्यवस्था, जाति आधारित पूरकता और धर्म की केन्द्रीयता पर अत्यधिक निर्भर है। आधुनिक लोकतांत्रिक समाज में, जहाँ समानता, बहुलता और व्यक्तिगत अधिकारों पर बल दिया जाता है, वहाँ उनके विचारों के कुछ हिस्सों को रूढ़िवादी और परंपरापरक समझा जाता है। फिर भी, यह निर्विवाद है कि उपाध्याय जी के विचार भारतीय समाज को आत्मनिर्भर, नैतिक और समरस बनाने की दिशा में अत्यंत प्रेरणादायी हैं। वे भारतीय संस्कृति और जीवन मूल्यों की जड़ों से जुड़कर आधुनिकता का सामना करने की दृष्टि प्रदान करते हैं। इसीलिए आलोचनाओं के बावजूद उनका एकात्म मानववाद आज भी वैचारिक विमर्श का विषय बना हुआ है और भारतीय राजनीति तथा समाज को दिशा देने की क्षमता रखता है

निष्कर्ष

पंडित दीनदयाल उपाध्याय का एकात्म मानववाद केवल एक राजनीतिक विचारधारा नहीं, बल्कि भारतीय समाज को पुनर्गठित करने का एक समग्र दर्शन है। इसमें व्यक्ति और समाज के बीच संतुलन, धर्म आधारित जीवन-दृष्टि, अंत्योदय, ग्राम स्वावलंबन तथा नैतिक राजनीति को केन्द्रीय महत्व प्रदान किया गया है। यह दर्शन न तो पूंजीवाद की असीमित भोगवादी प्रवृत्ति का समर्थन करता है और न ही समाजवाद की केंद्रीकृत और व्यक्तिनाशक प्रवृत्ति को स्वीकार करता है। इसके विपरीत यह भारतीय संस्कृति की जड़ों से जुड़ा हुआ ऐसा वैचारिक आधार प्रस्तुत करता है, जिसमें व्यक्ति, समाज, राष्ट्र और विश्व सभी के हितों का संतुलित समन्वय संभव है। आधुनिक भारत जिन चुनौतियों का सामना कर रहा है जैसे सामाजिक असमानता, सांस्कृतिक अस्मिता का संकट, पर्यावरणीय असंतुलन और नैतिक पतन उनके समाधान की संभावनाएँ उपाध्याय जी की विचारधारा में विद्यमान हैं। अंत्योदय का सिद्धांत समाज के अंतिम व्यक्ति तक विकास की रोशनी पहुँचाने का मार्ग दिखाता है, जबकि ग्राम स्वराज और स्वावलंबन आज के वैश्विक आर्थिक ढांचे में भी भारत को आत्मनिर्भरता की दिशा में अग्रसर कर सकते हैं। इसी प्रकार उनकी धर्म आधारित जीवन-दृष्टि केवल धार्मिक आचरण तक सीमित नहीं, बल्कि यह नैतिक राजनीति और उत्तरदायी शासन की नींव है। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि पंडित दीनदयाल उपाध्याय का एकात्म मानववाद न केवल बीसवीं शताब्दी की भारतीय राजनीति में वैचारिक हस्तक्षेप था, बल्कि इक्कीसवीं शताब्दी के भारत के लिए भी यह उतना ही प्रासंगिक और मार्गदर्शक है। यह विचारधारा भारतीयता की जड़ों से जुड़े रहकर आधुनिकता को आत्मसात करने की शक्ति प्रदान करती है और भारत के लिए "स्थायी, संतुलित और सर्वांगीण विकास" का पथ प्रशस्त करती है।

संदर्भ सूची

1. *एंडरसन, वॉल्टर और श्रीधर डी. दामले। आर.एस.एस.: ए व्यू टू द इनसाइड। नई दिल्ली: पेंगुइन इंडिया, 2018।*
2. *एल्स्ट, कूनराड। डीकोलोनाइजिंग द हिन्दू माइंड: आइडियोलॉजिकल डेवलपमेंट ऑफ हिन्दू रिवाइवलिज्म। नई दिल्ली: रूपा पब्लिकेशंस, 2001।*
3. *जोशी, मुरली मनोहर। इंटीग्रल ह्यूमनिज्म: फिलॉसफी ऑफ दीनदयाल उपाध्याय। नई दिल्ली: पब्लिकेशंस डिवीजन, 2016।*
4. *जाफ्रेलोट, क्रिस्टोफ। हिन्दू राष्ट्रवाद: ए रीडर। प्रिंसटन: प्रिंसटन यूनिवर्सिटी प्रेस, 2007।*
5. *कपिला, कनिका। ऐन इंटेलेक्चुअल हिस्ट्री फॉर इंडिया। कैम्ब्रिज: कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, 2010।*
6. *ठेंगड़ी, दत्तोपंत। एकात्म मानववाद: समीक्षा और प्रासंगिकता। नागपुर: साहित्य सिंधु, 1998।*

7. *दत्तोपंत ठेंगड़ी। एकात्म मानववाद: समीक्षा और प्रासंगिकता। नागपुर: साहित्य सिंधु, 1998।*
8. *द्विवेदी, रमेश। भारतीय समाज और सांस्कृतिक चेतना। लखनऊ: लोकभारती प्रकाशन, 2008।*
9. *पंत, के. सी. भारतीय राजनीति के वैचारिक आयाम। नई दिल्ली: पुस्तक मंदिर, 1995।*
10. *पंथम, थॉमस। "भारतीय राजनीतिक चिंतन में परंपरा और आधुनिकता।" पॉलिटिकल स्टडीज़ 34, संख्या 1 (1986)।*
11. *प्रधान, माधव गोविंद। पंडित दीनदयाल उपाध्याय: विचार और व्यक्तित्व। नई दिल्ली: प्रभात प्रकाशन, 2005।*
12. *भट्ट, एस. एन. भारतीय राजनीति और वैचारिक प्रवाह। नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन, 2009।*
13. *भट्टाचार्य, सब्यसाची। भारतीय राजनीतिक चिंतक: आधुनिक भारतीय राजनीतिक विचार। ऑक्सफोर्ड: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 2011।*
14. *मिश्रा, बी. भारतीय राजनीतिक विचार: ए थ्योरिटिकल परिप्रेक्ष्य। नई दिल्ली: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 2010।*
15. *नूरानी, ए. जी. आर.एस.एस. और भाजपा: अ डिवीजन ऑफ लेबर। नई दिल्ली: लेफ्टवर्ड बुक्स, 2000।*
16. *राघवन, वी. दीनदयाल उपाध्याय: लाइफ एंड लेगेसी। नई दिल्ली: पेंगुइन रैंडम हाउस, 2018।*
17. *राय, राम बहादुर। दीनदयाल उपाध्याय और भारतीय राजनीति। दिल्ली: वाणी प्रकाशन, 2017।*
18. *शर्मा, आर. भारतीय समाज और सांस्कृतिक पहचान। नई दिल्ली: सेज पब्लिकेशंस, 2015।*
19. *सिंह, एम. पी., और हिमांशु रॉय। भारतीय राजनीतिक विचार: विषय और चिंतक। नई दिल्ली: पियर्सन एजुकेशन, 2011।*
20. *सिंह, श्याम नारायण। भारतीय राजनीति में वैचारिक आयाम। दिल्ली: वाणी प्रकाशन, 2014।*
21. *सोनी, सुरेश। भारतीय संस्कृति और एकात्म मानववाद। नई दिल्ली: भारत प्रकाशन, 2012।*
22. *सुरेश सोनी। भारतीय संस्कृति और एकात्म मानववाद। नई दिल्ली: भारत प्रकाशन, 2012।*
23. *उपाध्याय, दीनदयाल। एकात्म मानववाद। नई दिल्ली: भारतीय जनसंघ प्रकाशन, 1965।*
24. *उपाध्याय, दीनदयाल। राजनीति और संस्कृति। नई दिल्ली: भारत प्रकाशन, 1968।*
25. *वाजपेयी, अटल बिहारी। भारत की खोज में एकात्म मानववाद। नई दिल्ली, 1980।*
26. *वर्मा, आर. हिन्दुत्व और भारतीय राजनीति। नई दिल्ली: रूटलेज इंडिया, 2020।*
27. *वैद्य, माधव गोविंद। पंडित दीनदयाल उपाध्याय: विचार और व्यक्तित्व। नई दिल्ली: प्रभात प्रकाशन, 2005।*
28. *यादव, बी. इंटीग्रल ह्यूमनिज्म एंड इंडियन पॉलिटिकल थॉट। नई दिल्ली: रूटलेज इंडिया, 2019।*